ग्राम साहित्य माला — प्रथम पुष्प

स्वराज्य-दर्शन

संग्रह कर्ता—

जगेश्वर प्रसाद सिंह

"भारतीय किसान"

स्वराज्य साहित्य माला No ... प्रथम पुष्प

स्वराज्य दर्शन

इस पुस्तक में "प्रताप" "स्वदेश" "राजस्थान-केसरी" "तरुण-भारत" "प्रजाबन्धु" "हिन्दी-समाचार" "देश" "उत्साह" "कर्मवीर" "कर्त्तव्य" "स्वराज्य" आदि २ समाचारपत्रों की मार्मिक एवं ओजस्विनी कविताओं का संग्रह है।

प्रथमवार १०००]

संयुक्त प्रान्त के राष्ट्रीय महारथी, नहरू सम्प्रदाय के समुज्वल रत्न, युवक दल केसरी, महान त्याग-वीर, जिनने माता का आवाहन श्रवण कर अपनी चलती हुई वारिष्टरी छोड़ी यही नहीं प्रत्युत जिन्होंने मखमली गद्दा तथा पेरिस के धुले कपड़ों को छोड़ साधारण बिस्तर और मोटा खद्दर धारण किया, जिनकी सत्य-परामर्श लेकर ही मैंने असहयोग व्रत का अनुष्ठान किया, जिनकी कीर्ति कौमुदी की तूती आज न केवल युक्त प्रान्त हीमें प्रत्युत सारे देश में चहक रही है.

उन्हीं

पण्डित जवाहरलालजी नेहरु

के

कर कमलों में संग्रह कर्ता द्वारा सादर सप्रेम

समर्पित

जलेश्वर प्रसाद सिंह भारतीय-किसान

दो शब्द

प्रिय पाठक वृन्द !

चिरकाल की लगी हुई लगन आज सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की असीम कृपा से पूर्ण हुई।

जिस समय में अपनी राष्ट्रीय महासभा या यों कहें कि देशके पिता महासभाकी महान आत्मा महात्मा गांधीकी न्याय संगत आज्ञा को शिरोधार्य्य कर, और अपनी प्यारी भारत-जननी की करुणवती आवाज को श्रवण कर इस गुलामी की जबरदस्त बेड़ी में जकड़े रहने का आह्वान करने वाले स्कूल से अपने प्रान्त में सर्व प्रथम असहयोग किया उसी समय एक राष्ट्रीय भाव की अद्वितीय कविताओं का संग्रह कर एक पुस्तक प्रकाशित करने की प्रबल आकांक्षा उत्पन्न हुई। लेकिन राष्ट्र के अत्यन्त आवश्यकीय कार्यों के सम्पादन करने में इतनी देर हुई। आज बहुत मुद्दत के बाद यह 'स्वराज्य-दर्शन' नामक पुस्तक आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर सका।

इस पुण्य-भूमि आर्य्य देश में इतना अत्याचार हो रहा है कि हम भारतवासी इन असहाय परतन्त्र वेदना को बर्दाश्त नहीं कर सकते। उसी पराधीनता के बेड़ी से मुक्त करने के लिये यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। आशा है आप सज्जन वृन्द इसे अपना कर एवं हमें उत्साहित कर फिर कोई नवीन पुस्तक प्रकाशित करने का सौभाग्य प्रदान करेंगे।

वन्देमातरम्

आपका शुभेच्छु
वालेश्वर प्रसाद सिंह
निर्भीक।
अध्यक्ष श्री गृह भूषण
पुस्तकालय दियारगढ़

ति, ति-१५-५-२

विषय सूचि।

संख्या	पद्य का शीर्षक	लेखक	पृष्ठाङ्क
१—जयमा पुकारें	,, श्रीयुतमनोरञ्जनप्रसाद	(देश)	१
२—स्वदेश प्रेम	,, बनवारी लाल शर्मा	(हि, स,)	२
३—असहयोग की ललकार	,-निरंकुश	(रा, के,)	३
४—अभिलाषा	,, माधव शुक्ल	(कर्मवीर)	३
५—वीर-प्रण	,, प्रकाश	(रा, के,)	४
६—धर्म-युद्ध	,, हरिराम पुजारी	(रा, के,)	५
७—खद्दर	,, आर, एन (कमलेश)	(रा, के,)	६
८—असहयोग-प्रण	,, मदन गोपाल वाजपेयी	(कर्त्तव्य)	७
९—राष्ट्रीय-हुङ्कार	,, शोभा रामधेनु सेवक	(कर्त्तव्य)	७
१०—जेल जाना	,, विपिन विहारीलाल	(कर्त्तव्य)	८
११—विदेशी वस्त्रों का विसर्जन	,, चातक	(कर्त्तव्य)	८
१२—आज्ञा !	,, रामचन्द्र श० काव्यकंठ	(स,भा,)	१०
१३—चेतावनी	,, ,,	,, (स, भा,)	११
१४—असहयोगी-वचन	,, सम्राट	(रा, के,)	१२
१५—राष्ट्रीयोद्बोधन	,, बालेश्वर प्रसाद सिंह 'निर्भीक'	(रा,के)	१२
१६—कर लेने दो वार	,, निश्चल	(प्रजाबन्धु)	१४
१७—चर्खा	,, राधा वल्लभ पाण्डेय	(प्र-ब,)	१५
१८—जेल हमें अब जाने दो	,, राधा कृष्ण	(प्रजाबन्धु)	१६

संख्या पद्य का शीर्षक लेखक पृष्ठाङ्क

१९—कृषक-भावना-लालेश्वर प्र० सिंह भारतीय किसान,, १७
२०—हमें तो खुश हो के जेल भरना ।-मोहन ,, कर्तव्य-१८
२१—साहब और जी हजूर । "नृसिंह" कर्मवीर—१९
२२—गांधी आदेश । " निश्चल" कर्तव्य—२०
२३—प्रेम का आरम्भ—श्री शोभा रामधेनु सेवक (कर्तव्य) २१
२४—उठो हिन्दुओं क्यों पड़े सो रहे हो श्री चातक ,(कर्तव्य)२२
२५—अरमान रह न जायें । श्री गोपबन्धु (कर्तव्य) २३
२६—माता पिताके प्रति । श्री बालेश्वरप्रसादसिंह 'निर्भीक'२३
२७—अमनके नाम पर अन्याय । श्री निश्चल " (वैभव)२३
२८—स्वार्थ जीवन । श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय (स्वराज्य) २४
२९—पथिक । श्री कर्मशील (तरुण-भारत) २५
३०—तब भारतीय कहलाऊँ मैं । श्री सुमेर-पुरी [प्रताप] २६
३१—प्रबोधन । श्री भगवान सिंह (कर्मवीर) २७
३२—देश भक्त कैदी जेल में । श्री पागल (प्रताप) २८
३३—शक्ति-सन्देश । श्री गुलाब (प्रताप) ३०
३४—अनुरोध । श्री सहदेव सक सेना "पदम (रा, के,) ३१
३५—बैठे हैं । श्रीः बेनी माधव तिवारी (उत्साह) ३१
३६—श्रीः यु०म०क०मो० गांधी। श्री भारतीय-किसान (रा.के)३२
३७—जयनाद । श्री कन्हैयालाल जैन (प्रताप) ३३
३८—कपटी कुत्ते । श्री रामचन्द्र शर्म्मा (तरुण भारत) ३४
३९—हमारा-कर्तव्य। श्रीविश्वम्भरदयाल त्रिपाठी(स्वराज्य)३४

संख्या पद्य का शीर्षक ... ; लेखक पृष्ठाङ्क

४०—चेतावनी। श्री एक-भारतीय (तरुण भारत) ३५
४१—उद्बोधन। श्री गुलाब (स्वराज्य) ... ३६
४२—धर्म चौकीदारों की टेर। श्री युत ए० के० (रा, के,)३७
४३—मेरा कौल। श्री मेरठी (रा० के०)३८
४४—विजय होवे। श्री सूरजमल बड़जातिया (रा० के०)३६
४५—भ्रातृ-सन्देश—श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह "निर्भीक" ३६
४६—बलिवेदी श्री कुसुम (प्रताप) ४०
४७—दीन-निहोरा—श्री एक देशभक्त (प्रताप) ४१
४८—ध्येय (प्रताप) ४२
४६—सुन्दरस्वदेशीकीपताका फहराने। श्री रसिकेन्द्र (स्वदेश४२
५०—हृदयोद्गार श्री हरिश्चन्द्र देव (प्रताप)४३
५१—सदिच्छा श्री हरिश्चन्द्र देव (प्रताप)४३
५२—युवक-सन्देश—श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह "निर्भीक" ४४
५३—एक अबला की पावन प्रतिज्ञा। एक अबला (स्वदेश)४५
५४—जिज्ञासा—श्री ब्रह्मानन्द दूबे (चैतन्य चन्द्रिका)४५
५५—स्वार्थ—बलिदान श्री चन्द्रदीपगुप्त (चैतन्यचन्द्रिका) ४६
५६—असहयोगका ठान श्री अभिलाषी (उत्साह)४६
५७—असहयोगीके उद्गार श्री प० शुकदेवतिवारी(रा०के०)४७
५८—अड़े रहेंगे श्री बे अक्ल कोटा (रा० के०) ४८
५६— स्वदेश (प्रताप) ४६
६०— स्वाधीनता (प्रताप) ४६

संख्या	पद्य का शीर्षक	लेखक	पृष्ठाङ्क
६१—	स्वदेशी की पुकार	श्री भारतीय (स्वदेश)	५०
६२—	वन्देमातरम्	श्री युक्त " त्रिशूल (प्रताप)	५१
६३—	भारत-वर्ष,	श्रीयुत मैथिलीशरण गुप्त (प्रताप)	५२
६४—	विनय	(रा० के०)	५३
६५—	स्वराज्य	(प्रताप)	५३
६६—	हमारी प्रतिज्ञा	श्री : रामकिशोर शर्मा (कर्मवीर)	५४
६७—	राष्ट्रीय—सैनिक	श्री:नृसिंह (कर्मवीर)	५५
६८—	है फ़कत तूही हमारे धर्म का दर्द मां स्वदेश	श्री शायक (स्वदेश)	५५
६९—	हमारी अभिलाषा	लक्ष्मी श्रीनारायण (वर्मन) (कर्मवीर)	५६

स्वराज्य-दर्शन ।

(१)

जय माँ पुकारें ।

आवो सभी मिल के जय माँ पुकारें,
माँ का सुयश गान जग में प्रचारें ॥ आवो० ॥
गावें विजय गान हिन्दू मुसलमान ।
पारस्परिक भेद सारे विसारें ॥ आवो० ॥
काबा व काशी मिलें आज इक साथ,
माता के मन्दिर पै दोनों को वारें,
माला करें दूर तस्वीर रख देवें,
लोहे की जंजीर हाथों में धारें ॥ आवो० ॥
चन्दन के टीके व रज को करें दूर,
खाक वतन का तिलक सर पै धारें ।
"गांधी" "वशीकृत" पुजारी बनें इसके,
सब आरती मिल के इसकी उतारें ॥ आवो० ॥
कर्त्तव्य पालन करें होके निर्भीक,
जेलों व फाँसी से हिम्मत न हारें ।
पूजा करें माँ के पद पद्मकी नित्य,
मूर्ति सदा इसकी हिय बीच धारें ॥ आवो० ॥

सब शक्ति सब भक्ति सब प्रेम अनुरक्ति,
तन मन रतन, धन सभी इस में वारें।
रञ्जन का विनती है सब से यही आज,
एक स्वर से माता की जय जय पुकारें॥आयो०॥

(२)

स्वदेश प्रेम।

सौदा हो अगर मुझ को तो सौदाय वतन हो,
बुलबुल की तरह विदेजियाँ रागे चमन हो।
शीरीं वतन के वास्ते मैं कोहे कुन बनूँ,
तोड़ूँ पहाड़ सामने गर रंजो महन हो।
मन्दिर भी यही हो मेरा मस्जिद भी यही हो,
चन्दन हो अगर सर पै तो बस खाके वतन हो।
हाँ! उल्फते वतन का हो यह जोशो बलवला,
बाँधे हुए हर फर्दे बशर सर पै कफन हो।
हो खिदमते कौमी ही बस ईमान हमारा,
फिर बेनवा फकीर हो या शाहे यमन हो।
मन्सूर की तरह कोई सूली पै चढ़ा दे,
"ज्ञानी" मगर न एक भी चेहरे पै शिकन हो।

(३)

असहयोग की ललकार।

बजा है असहयोग शंख वीर भारत का,
गारत अनीति का सुदृढ़ दुर्ग होवेगा।
रे रे "डायरिज्म" अब गुजर न होगी तेरी,
अपने भिगोये को स्वयं ही निचोवेगा,
उठा है बवण्डर स्वतंत्रता पयोधि में जो,
दमन जहाज को अवश्य वो डुबोवेगा।
औरों को दबाने की फिकर छोड़ कर देख,
अन्यथा जो प्राण उसे भी कहीं खो देगा।

(४)

अभिलाषा।

मेरी जाँन रहे मेरा सर न रहे सामाँन रहे न ये साज रहे।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे माता के सर पै ताज रहे॥
पेशानी में जिसके सोहैं "तिलक" अरु गोद में "गांधी" विराज रहे।
न ये दाग वदन में सुफेद रहे न ये कोढ़ रहे न ये खाज रहे॥
सिक्ख व हिन्दू मुसल्मान एक रहें भाई सा रस्मो रिवाज रहे।
गुरु ग्रंथ पुरान कुरान रहें मेरी पूजा रहे वो निमाज रहे॥
मेरी टूटी मड़ैया में राज रहे कोई गैर न दस्तनदाज रहे।
मेरी वीणा के तार मिलें हो सभी इक भीनी मधुर आवाज रहे॥

ये किसान मेरे खुश हाल रहें पूरी हो फसल सुख साज रहे।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें मेरी माँ बहिनों में लाज रहे॥
मेरे बैल रहें मेरी गाय रहे घर घर में भरा सब नाज रहे।
घी दूध की नदियाँ बहती रहें हर सू आनन्द स्वराज्य रहे॥
माधो की है चाह खुदा की क़सम मेरे बाद वफ़ात ये ताज रहे।
गाढ़े का कफन हो मुझपै पड़ा "वन्दे मातरम्" का अल्फ़ाज रहे॥

---

(५)

वीर-प्रण।

पैदा हुए हैं देश हितही देश हित मर जायगे।
हम हैं समर्पित देश हित कुछ देश हित कर जायँगे॥ १॥
दिन रात हृदयों में हमारे गूँजती आवाज यह।
बलिदान हो कर देश हित पर, हम अमर हो जायँगे॥ २॥
स्वाधीनता के भक्षकों, उन पापियों के सामने।
हम बिकट भैरव नाद करके युद्ध में, अड़ जायँगे॥ ३॥
सत्याग्रही हो वीर हम सब अटल निर्भय धीर हों।
इस पूज्य "भारत वर्ष" का स्वातंत्र केतु उड़ायँगे॥ ४॥
विश्वेश को तज और के सम्मुख न शीश झुकायँगे।
निज आत्मबल अरु धीरता को आज हम प्रगटायँगे॥ ५॥
इस आत्मबल के सामने जड़वादिता मिट जायगी।
नीतिज्ञता हो कूट चाहे धूल में मिल जायगी॥ ६॥

पापी जनों को मारना है प्रेम की तलवार से।
तलवार को भी छेदना है प्रेम मय औजार से ॥ ७ ॥
हम प्रेम मय हो उच्च स्वर से गीत मनहर गायँगे।
"जय हिन्द,, "वन्दे मातरम्" से नीच दल दहलायँगे॥ ८ ॥

— o —

(६)
धर्म-युद्ध।

उठो बन्धु गण उठो वेगि अब धर्म युद्ध करना होगा।
पूज्य देश के व्यथित हृदय की विषम पीर हरना होगा॥
बाल वृद्ध सब उस अवसर में स्वार्थत्याग करना होगा।
कृषक अछूत कुलीन सभी को एक साथ चलना होगा ॥ १ ॥
स्वेच्छाचार निरंकुशता से ताल ठोक लड़ना होगा।
देश जाति के लिए प्रेम से उचित तुम्हें मरना होगा॥
अनाचार अधर्म अनीति से पग पग पर डरना होगा।
सत्य धर्म की तरी बना कर दुःख सागर तरना होगा ॥ २ ॥
"गांधी जी" की पावन आज्ञा को सर पर धरना होगा।
छोटे बड़े सभी को उर में प्रेम भाव भरना होगा॥
"देश" निकाला "शूली चढ़ना" कष्ट बहुत सहना होगा।
"स्वतन्त्र" हुए बिन नहीं हटेंगे यही टेक धरना होगा ॥ ३ ॥
लाख डराये, लाख सताये कभी नहीं डरना होगा।
सत्याग्रह की वेदी पर डट स्वदेश व्रत धरना होगा॥
सदियों पीछे पड़े हुए थे अब आगे बढ़ना होगा।
राष्ट्रीय मन्दिर में सब को एक पाठ पढ़ना होगा ॥ ४ ॥

भाषा भेष विदेशी को तज देशी को गहना होगा ।
हिन्दू मुस्लिम दोनों को ही आगे को बढ़ना होगा ॥
देशी खाना, देशी पाना देशी का गाना होगा ।
नाच रंग अब खेल तमाशे देशी ही करना होगा ॥ ५ ॥
देशी रोना देशी हंसना देशी का सपना होगा ।
सोते और जागते निशि दिन देशी व्रत जपना होगा ॥
जलियाँ तपोभूमि में अपना नूतन मठ रचना होगा ।
हिन्दी उर्दू हिन्द देश का महा मन्त्र जपना होगा ॥ ६ ॥
पराधीन अब नहीं रहेंगे वैमनस्य तजना होगा ।
इसीलिए तो "असहयोग" का साज आज सजना होगा ॥
चढ़े चलो विजयी होवेंगे ईश्वर अवशि सदय होगा ।
सफल मनोरथ हम सब होंगे इसमें नहि संशय होगा ॥ ७ ॥

---

(७)

खद्दर ।

हम खद्दर को अपनायेंगे ।
अब न छुवेंगे वस्त्र विदेशी जिस पर अकड़ रहे परदेशी ।
कीमत चाहे लग जाय बेशी देशी वस्त्र बनायेंगे ॥ हम०—
चिकन नैनसुख को छोड़ेंगे नाता मलमल से तोड़ेंगे ।
मुख मलमल से हम मोड़ेंगे अल्फा सर्ज हटायेंगे ॥ हम०—
सकल विदेशी वस्त्र हटा कर फैसन को बस बता बता कर ।
घर घर में चर्खा चलवा कर, रेजी खूब बनायेंगे ॥ हम०—

रोवें मैनचेष्टर वाले झल्लायें लंकाशायर वाले।
पड़े हमें भी जीवन लाले, हम फिर क्यों गम खायेंगे ॥ हम०—
खद्दर ही हो विश्व हमारा, खद्दर हो सर्वस्व हमारा।
खद्दर ही मम जीवन तारा, खद्दर मय हो जावेंगे ॥
हम खद्दर को अपनायेंगे ॥

(८)

असहयोग-प्रण ।

करो ये प्रतिज्ञा करूं मातृ सेवा, डरूंगा नहीं मैं करूं देश सेवा।
चले तीर चाहे चलें तोप गोले, सहूँगा सभी का असहयोग को ले।१।
हँसी से खुशी से मरेंगे कटेंगे चहे जेल जायें नहीं पै हटेंगे।
रहें शांति से आत्मबल पे डटेंगे मरें देश पै देश को ही रटेंगे ॥२॥

(९)

राष्ट्रीय-हुङ्कार।

दुलारे देश भारत के सभी संकट मिटायेंगे।
समय है काम करने का नहीं बातें बनायेंगे ॥ दुलारे० ॥
कठिनतर विघ्न बाधायें डरायें आनकर हमको।
डरेंगे हम नहीं हरगिज नियम अपना निभायेंगे ॥ दुलारे० ॥

हमारी भूल से बिछुड़े हुए हैं बन्धु, जो हम से,
नहीं वे गैर हैं उनको कलेजे से लगायेंगे ॥ दुलारे० ॥
करेंगे दूर सब झगड़े बिछाकर ऐक्य की चद्दर,
सुखद कर्तव्य प्रियता का अनोखा रंग चढ़ायेंगे ॥ दुलारे० ॥
न भूले से भी आलस को, फटकने पास हम देंगे,
समझ साथी समुन्नति का सदुद्यम को बढ़ायेंगे ॥ दुलारे० ॥
सदा सन्मार्ग पर निर्भर रहेंगे हम कमर कसकर,
तजेंगे भावना मिथ्या प्रलोभन में न आयेंगे ॥ दुलारे० ॥
खबर जिनको न कुछ घर की पड़े जो सो रहे अबतक,
उन्हें प्रिय देश सेवा में जगाकर के लगायेंगे ॥ दुलारे० ॥
डरेंगे सत्य के सम्मुख हटायेंगे न पग पीछे,
अनय अविवेक का उधम मनस्वी हो मिटायेंगे ॥ दुलारे० ॥
खड़े हो अपने पैरों पर पराया आसरा तजकर,
विदेशी वस्तु की महिमा हृदय से अब हटायेंगे ॥ दुलारे० ॥
तिरस्कृत हैं हुई जिनसे हमारी माय औ बहिनें,
अटल प्रण है हमारा वह न उनको सर झुकायेंगे ॥ दुलारे० ॥
निरंकुशता निगोड़ी का निशाँ जड़ से मिटा देंगे,
शुभग शुचि प्रेमजल में हृद्‌कमल फिर से खिलायेंगे॥ दुलारे०॥
पढ़ेंगे पाठ प्यारा एकता औ आत्म गौरव का,
मुदित मन मातृ मन्दिर में सपूतों को दिखायेंगे ॥ दुलारे० ॥

(१०)

जेलखाना ।

घर बार छोड़ करके जायेंगे जेलखाना ।
यह डर नहीं है मुझको पायेंगे जेलखाना ॥
जिस जेल में महा प्रभु श्रीकृष्ण जन्म पाये ।
मेरे लिये तो प्यारा मन्दिर है जेलखाना ॥
कहते हैं लोग होती है जेल में फज़ीहत ।
गर वाकयी में पूछो जिन्नत है जेलखाना ॥
'गांधी महात्मा" ने जिसमें उमर बिताई ।
वह सौरय-गृह हमारा प्यारा है जेलखाना ॥
ये हथकड़ी व बेड़ी हैं जेवरात सुन्दर ।
सत्याग्रही जनों का सज़र है जेलखाना ॥
गृह-कार्य्य में अनेकों जंजाल दीख पड़ते ।
चित्त शांति का जरीया है एक जेलखाना ॥
दर दर विपिन गुफा में धूनी रमायेंगे क्यों ।
यदि मुक्ति मार्ग मैंने पाया तो जेलखाना ॥
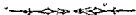
(११)

विदेशी-वस्त्रों का विसर्जन ।

टलो यहां से विदेशी वस्त्रों, न अब तुम्हारी है चाह हमको ।
तुम्हीं से भारत हुआ है गारत, किया है तुमने तबाह हमको ॥१॥
उद्योग धन्धे सभी हमारे, किये हैं आ कर विनिष्ट तुमने ।
नग्न के चर्खे स्वदेशी करघे, दी है मुसीबत अथाह हमको ॥२॥

कहाँ यहांकी महीन मलमल, पड़ा है ढाका में, आज फाका ।
बने निकम्मे जुलाहे कोरी, मिला ये तुम से गुनाह हमको॥३॥
बढ़ाई तुमने वे रोजगारी, बना तुम्हीं से बिहाल भारत ।
पड़े हैं पेटों के आज लाले, दिखाता मुश्किल निबाह हमको ॥४॥
रुई हमारी खरीद सस्ती, उसी के कपड़े मढ़े हैं हमपर ।
हुए धनी तुम, गरीब भारत, दिखाई गारत की राह हमको ॥५॥
कहाँ है भारत की वो तिजारत, रही दलाली ही देश में अब ।
जहाँ दिवाली थी अब वहाँ पर, दिखाती होली की दाह हमको॥६॥
तजेंगे तुमको सजेंगे तन पर, पवित्र प्यारा स्वदेशी खद्दर ।
हमारे "गांधी-महात्मा" ने, ये दी हैं कामिल सलाह हमको ॥७॥
हो "धन्यगांधी" जी जीवो, युग युग, चलाय चर्खे का चक्र फिरसे ।
मिली तुम्हीं से स्वदेश हितकी, नवीन निर्मल निगाह हमको ॥८॥
करोड़ों चर्खे चलाके कातेंगे, सूत सुन्दर पवित्र अपना ।
स्वयं बुनेंगे उसीके कपड़े, न अब तुम्हारी है चाह हमको ॥९॥
विदाई लो तू विदेशी वस्त्रों, बना है भारत है स्वावलम्बी ।
करेंगे मिलकर स्वदेश उन्नति, मिला अनिष्फल उत्साह हमको १०॥

(१२)

आजा !

आ जा ! देवी तू स्वतंत्रते, दया मयी माँ आ जा ।
क्रूर जनों की कपट नीति को मोदक सम तू खा जा ॥
आजा ! आजा !! पुण्य भूमि पर, निज अधिकार जमा जा ।
म्लेच्छ जाति-पद-मर्दित-भू, को पुनः पवित्र बना जा ॥

दानव-दल दलिनी हे अम्बे, आजा ! आजा !! आजा !!!
अत्याचार-अधर्म अनय के कारण, दूर भगा जा ॥
आजा ! आजा !! तुम्हें बुलाते, भक्ति भाव से आजा ।
हिन्दुस्थान सदन हो तेरा, सुख से समय विता जा ॥
आजा ! आजा तिलक वन्दिता, इसी समय तू आजा ।
लोकमान्य लख तुझे हंसेंगे, मैया 'उन्हें हँसा जा ॥
शक्ति ! चण्डिके हो मत आना, शान्ति-मूर्ति हो आजा ।
जन्म सिद्ध अधिकार "तिलक' का, हम पावें तू आजा ॥
चातक हम सब चाह रहे हैं, स्वाति बून्द बन आजा ।
तृपित, चित्त को सुखद—सुधारस, तू स्वच्छन्द पिलाजा ॥
मनों कामना पूर्ण करो माँ, ! आजा ! आजा !! आजा !!!
भारत-भव्य भाल पर निज पद-रज का तिलक लगाजा ॥
निज दर्शन दर्शा जा देवी ! आजा ! आजा !! आजा !!!
भारत-भू को प्रखर-प्रभा को, पूर्णतया प्रकटा जा ॥
स्वागत ! हम करते हैं तेरा, आजा ' आजा !! आजा !!!
बन्दी-गृह में बन्दी जनको, वीणा शब्द सुना जा ॥

(१३)

चेतावनी ।

रे गयन्द ! हो सजग ! तुम्हारा, अब होगा कल्याण नहीं,
तुम्हें ठौर अब नहीं मिलेगी, इस उपवन के मध्य कहीं ॥
अन्यायी हो, तुम्हें यहाँ हम, बोलो कैसे रहने दें ?
मन माना उत्पात मचाते, कहो यही क्या करने दें ?

नहीं! नहीं!! यह हो नहि सकता, अत्याचारी भारी हो।
मान सरोवर हंस-प्रिय है, वक को नदियाँ प्यारी हों॥
पुण्य विपिन के बीच अगर, कुछ दिन भी तुम रह जाओगे-
सुन्दर-सुमन विहीन विटप, अब शुष्क लता दर्शाओगे॥
कलित कुञ्ज में कुछ दिन रहकर, इसे श्मशान बनाये हो।
स्वर्ग पुरी में, भला दैत्य हो, अरे अधम क्यों आये हो॥
देव वृन्द हैं यहाँ विचरते, इनको भी दुःख देते हो।
नीच प्रकृति का परिचय देकर, "सर्वस" तुम हर लेते हो॥
रे मन्दान्ध गज! घोर नीचता देख हृदय भी फटता है,
तैर रहे अन्याय-उदधि तुम, क्या अब भी बच सकता है?
सावधान हो! तव मद-मर्दक सिंह, गर्जता आता है।
शस्त्रहीन पर पंजे के बल तुमको नाच नचाता है॥

(१४)

असहयोगी-वचन।

न लेंगे चैन दम भर भी, बिना स्वाधीनता पाये।
खुशी से दिल कड़ा करके, सताओ जितना जी चाहे॥
"अभी लायक नहीं हो तुम" ये न देने की बातें हैं।
मगर हम लेके छोड़ेंगे, "बनाओ" जितना जी चाहे॥
चला लो तोप बन्दूकें, निकालो तुम हविस-दिलकी।
हमारे भाई से हमको, कटाओ जितना जी चाहे॥
हमारी जान जाये देश हित गौरव समझते हैं।

खरा सोना कसौटी पर कसा लो जितना भी चाहे ॥
हमारी गूंजती है जाय, तुम्हारी जय कहाँ है अब ।
तसल्ली के लिये डंके बजाओ जितना जी चाहे ॥
अब हम कर्तव्य-पथ से एक तिल भी टल नहीं सकते ।
ये घुड़की बन्दरों का अब दिखाओ जितना जी चाहे ॥

(१५)

राष्ट्रीयोद्बोधन ।

असहयोग के निर्मल पथ से पीछे पग न हटाना ।
"गाँधी प्रभु की" आज्ञा मान हृदय को प्रबल बनाना ॥
असहयोग के अपनाने से यदि पड़े जेल में आना ।
हो चित्त प्रफुल्लित जेल में जाकर रूखी रोटी खाना ॥
कभी कृष्ण-मन्दिर जाने से अपना जी न चुराना ।
"भारत-जननी" की महिमा की गरिमा नहीं घटाना ॥
"लोकमान्य" ने जेल में जाकर गीता रहस बखाना ।
"श्री गांधी महराज" ने जाँ पर सत्याग्रह था ठाना ॥
स्वर्गागार गये पर ही तुम पूर्व प्रभा छिटकाना ।
असहयोग का भन्डा लेकर जय जयकार मचाना ॥
सत्याग्रह के मृदुल मन्त्र का उसमें जाप कराना ।
जेल जगत की तपशाला है धूनी यहीं रमाना ॥
गोरे औ नौकर शाही का खौफ, न दिल में खाना ॥
जिस प्रकार उद्धार होय, उस मारग को दर्शाना ।
"बालेश्वर" की अरज यही है भारत कीर्ति बढ़ाना ॥

(१६)

कर लेने दो वार !

कर लेने दो वार उन्हें, अपना अरमान मिटाने दो।
हटने के हैं वीर नहीं,आफत पर आफत आने दो॥
समझा होगा बड़े लोग हैं, जेलों से डर जायेंगे।
क्षमा प्रार्थना कर लेंगे, बस धमकी में आ जायेंगे॥
दें आशा यह छोड़, देखलें शूर सामने आते हैं।
होंगे जो दो चार भीरु वे, खुदही निकले जाते हैं॥
झूठा मोह न अब लड़कों से, वृद्ध पिता दिखलाते हैं।
देश धर्म पर बलि होना सुत, सुनकर खुशी जनाते हैं॥
सच्ची पुत्रवती अपने को, मातायें अब मान रहीं।
भारत के हित संतानों को, कर सहर्ष दे दान रहीं॥
वीर-पत्नियाँ भी कहती हैं, "सुख से जावो प्राणपते।
कृष्ण-भवन, में आप रहेंगे,तब तक चर्खा इधर कते॥
कष्ट कहाँ तक पहुंचायेंगे जी कर भर पहुंचाने दो।
मिट्टी मिले हुए आटों की, रोटी खूब खिलाने दो॥
कोमल कर कमलों से श्रम के, सारे काम कराने दो।
रस्सी को बटवाने दो, या चक्की ही पिसवाने दो॥
नाना नीर प्रलोभन हों, नर घातक एक न चाहेंगे।
स्वाति स्वराज्य सुधारस लेंगे, "निश्चल टेक निभायेंगे॥"
सब कुछ सहने को उद्यत हैं, बनकर स्यार नभागेंगे।
मरते मरते मर जायें पर, सिंह स्वध्येयन त्यागेंगे॥

(१७)

चर्खा

करेगा चर्खा देशोद्धार, मनावें आवो जय जयकार ।
तप तप कर सव देव रिझाया, कर्मवीर ने आयुध पाया ॥
शिव त्रिशूल के सार सार से तकुआ हुआ तयार ।
इन्द्र धनुष की माल वज्र का वेलन वज्राकार ॥
विष्णु-चक्र का चक्र निराला, शक्ति खड्ग का हत्था आला ।
चमका चर्खा शत्रु दलन को मानों काल कुठार ॥ करेगा० १ ॥
शक्ति शत्रु की यही हरेगा, समर क्षेत्र सर यही करेगा,
यही मृतक व्यापार वणिज में फूंकेगा फिर प्राण ।
दुःख दारिद्र दैत्य दानव से, यही करेगा त्राण ॥
यही खबर भेखों की लेगा, वेकारों को रोजीदेगा,
धन दौलत का सुख समृद्धि का खोलेगा यह द्वार ॥ करेगा० २
निर्धन धनिक सभी का प्यारा, भारत की आखों का तारा,
साधक है यह स्वतन्त्रता का स्वावलम्ब आधार ।
पराधीनता का वैरी है अन्न वस्त्र दातार ॥
पतला हाल मिटाने वाला, गाढ़ा बल उपजाने वाला,
भंवर पड़ी डग मग नय्या का कर्णधार पतवार ॥ करेगा० ३
पूजन करलें पूजनीय है, वन्दन करलें वन्दनीय है,
रमा रहे नित रोम रोम में इसका प्यारा तार ।
देश देश में प्रान्त प्रान्त में इसकी हो भरमार ॥
ठौर ठौर में गाँव गाँव में नगर नगर में ठांव ठांव में,
घर २ गूँजे घर घर इसकी घोर घनी झनकार ॥ करेगा ॥

(१८)
जेल हमें अब जाने दो ।

हटो हटो इस पथ को छोड़ो जेल हमें अब जाने दो ॥हमें
न्याय धर्म सब उठा जगत से, पाप भरा है।
सदाचार का माथा फूटा, दुराचार चौदिक छाया ॥
सत्य कहो तो फाँसी देंगे, द्रोही तुम्हें बतावेंगे।
जी चाहेगा जितना मेरा, उतना तुम्हें सतावेंगे ॥
चलो ! शीघ्र इस नीच दास्य का नाश हमें कर आने दो ॥हटो०
नीचे रह तू खबरदार बस ! नहीं उठा सर ऊपर ताक ।
भूल गया क्या सड़ी गली में, रगड़ाया जो तुमसे नाक ॥
निर्लज ! नीच स्वतन्त्र बनेगा, सपना है तू होश सम्हाल ।
डायर है तैयार भला क्या, भूल गया तू अपना हाल ॥
आह ! हृदय में ज्वाला धधकी इसे शान्त कर आने दो ॥हटो०
जगतपिता के पुत्र मनुज हैं, पशु से नीचा क्यों माना।
हृदय, यकृत, मन, मस्तक सब हैं, हृदय हीन कैसे जाना ॥
पशुओं के भी स्वप्न सदा हे, मेहनत के फल खाने के।
योग्य बने हम कहते हैं यों कालापानी जाने को ॥
ईश्वर दत्त वाक शक्ति का पुनरुत्थान कर आने दो ॥हटो०
क्या मैं खाऊं क्या मैं पीऊं. पशु की इच्छा पर निर्भर।
कौन माई का लाल भला जो, उसे खिलाये वस्तु इतर ॥
किन्तु शोक ! तू भारतवासी पशुओं से नीचा ठहरा।
मदिरा जिसे पिलाई जाती रखकर पुलिसों, का पहरा ॥
खबरदार ! बस अभी २ यह अत्याचार मिटाने दो ॥हटो०
अपनी घर की बनी चीज को, सभी काम में लाते हैं।

वस्त्र स्वदेशी पहन ओढ़ कर सभी देश सुख पाते हैं ॥
किन्तु हाय! जो चर्खा मेरा सूत पवित्र बनाता है।
उसका कपड़ा धारण करते, "पिनल कोड" चढ़ आता है॥
चव्वालीस शत एक (१४४) दफा की तेज धार को आने दो॥हटो०
रहे गुलामी में अबतक पर, उसे छोड़ कर के ही हम।
अपने मालिक आप बनेंगे बिना देर के बस इस दम॥
सभ्य जगत में वीर मनुज बन, अपना रूप दिखायेंगे।
स्वाभिमान स्वातन्त्र्य सुधा पी कृतकृत्य हो जायेंगे॥
स्वर्ग जनित यह दिव्य तेज है कारा हो में जाने दो॥हटो०
भारत वासी! जेल तीर्थ है चलो सभी मिल हो आवें।
राजा रङ्क युवा या बूढ़ा, सभी धन्य हैं जो जावें॥
सुख सम्पत्ति मान मर्य्यादा, मनुष्यत्व के सब साधन।
प्रस्तुत हुए पड़े हैं सबही शीघ्र चलो होकर थिर मन॥
ऐसी यहाँ पड़ी है दौलत हमें उसे ले आने दो।
हटो हटो इस पथ को छोड़ो जेल हमें अब जाने दो॥

(१६)

कृषक–भावना।

वरदान।

प्रभो! यह दो सत्वर वरदान करें हम मातृ-भूमि दुःखदूर।
डरें बाधाओं से हम नहीं, विघ्न को कर दें चकना चूर॥
असहयोगान्दोलन में सदा, लगाये अपना कन्धा रहें।
मान "गान्धी जी की ही बात" शान्त हो सारे संकट सहें॥

आयोजन सत्याग्रह की करें, धारण खादी की पोशाक।
चलायें निशि-दिन चरखा चक्र कि जिससे जमें स्वदेशी धाक॥
गदर-मय हो-भारतवर्ष, विदेशी का जब हो अवसान।
देश होगा सत्वर स्वाधीन, पावेंगे हम निज सम्मान॥
तोड़कर के एकता का भेद, कठिन कर देना कर के बन्द।
दासता की बेड़ी को तोड़, बनेंगे भारतीय स्वच्छन्द॥
विघ्न डालेंगे बिछुड़े बन्धु, यत्न करना चाहेंगे, भंग।
दिखाने होंगे, ऐसे कार्य्य, रंग-होवे उनका बदरंग॥
करेंगे माल हमारा जब्त, जेल में देंगे हमको ठेल।
चढ़ायेंगे सूली पर हमें, मगर यह तो है मेरा खेल॥
सहेंगे सब कुछ होकर मौन, हमें जब है होना स्वाधीन।
स्वतन्त्रतादेवी रहती सदा, जानलो नर बलि के आधीन।
चढ़ाकरके अपना बलिदान, करेंगे देवी को आनन्द।
ग्रहण कर, देवीका वरदान, जगत् में विचरेंगे स्वच्छन्द॥
जियेंगे होकर के स्वाधीन, नहीं तो देंगे-अपनी जान।
ठानली है ऐसीही ठान, सुनो कहता है 'एक किसान॥"

---

(२०)

हमें तो खुश हो के जेल भरना।

सम्हल के चलना यह चाल मुशकिल, गनीम को इससे मात करना।
स्वदेशी की उनको किश्त देकर, उन्हीं के घर में है जेर करना॥१॥
बनाके गोला कपास की हम, मशीनगन हों हमारे चर्खे।
लड़ेंगे हम उनसे शान्त होकर, वतन पै है हमको आज मरना॥२॥
लगी हैं तो पें हजारों हम पर, जमीन पर और आसमाँ पर।

पर अब डराने से ना डरेंगे, करें वे उनको जो जुल्म करना॥३॥
नहीं है परवाह तुम भरोगे, हम वे गुनाहों से कैद खाना।
तुम अपने फेलों से मरमिटोगे, जला लो जो तुमको है जलाना॥४
हमारी बेहबूदि देख करके, तुम्हारे सीने पे चोट लगती।
नहीं है इसका इलाज कोई, हमें तो है अपनी शान रखना॥५॥
हमारे बच्चों का खूँ बहाकर, अरे सितमगर! नहीं लजाता।
ले प्यास को अपनी तू बुझाले, बहा शहीदों के खूं का झरना॥६॥
खिलाफतो पं-जाब का दिल, खिंचा हे नक़्शा नहीं मिटेगा।
है गैर मुमकिन कि भूल जावें, हम अपने बच्चों का वह सिसकना॥७
जो चाँद चिड़िया फसाई यारो, गिरा के दाने दो चार जर के।
नहीं है "मोहन" को काम उनसे, हमें है खुश होके जेल भरना॥८

---

(२१)

साहब और जी हुजूर।

असहयोग आन्दोलन ने तो गड़बड़ बड़ी मचाई है।
'जी हुजूर' जो फरमाते हैं इसमें मेरी सचाई है॥१॥
यह इस्लाह का मर्ज मिटाने का है कहिये कौन उपाय?
जी हुजूर, क्या खौफ खतर है, काफी है सैनिक समुदाय॥२॥
इस शासन से भारत वासी सचमुच रुष्ट हुए हैं?
ना हुजूर, हम उसके हामी, उससे पुष्ट हुए हैं॥३॥
बेशक, बेशक, तुम लोगों पर ही तो है शासन का भार।
जी हुजूर हम श्री-चरणों, पर कर सकते हैं जान निसार॥४॥
राव बहादुर तुम्हें बनाकर ऊँचे पद दिलवायेंगे।

श्री हुजूर की कृपा रहे फिर हम सब कुछ हो जावेंगे ॥५॥
हाँ, एक बात तो और, स्वदेशी का उद्योग सफल होगा?
जी हुजूर हम दिखला देंगे यह किस भांति विफल होगा॥६॥
हां, खूब देखना वह आन्दोलन आफत कहीं न ढा देवे।
जी हुजूर, बन्दे के रहते कोई कुछ तो कर लेवे ॥७॥
'थैंक्स' बहादुर, 'शेकहैंड' अब जा सकते हैं आप।
जी हुजूर, जीवन-फल पाया, कटे पुराने पाप ॥८॥

(२२)

गान्धी आदेश।

सजा दो असहयोग के साज, न मानो अब बिन लिये स्वराज।
"वीर ! तुम हो भारत संतान, न छोड़ो अपना यह अभिमान॥
मान पर अर्पण करदो प्रान, चलो हो जननी पर बलिदान।
विजय पर रक्खो निज विश्वास, तुम्हारी पूरी होगी आस॥
बचालो आर्य-देश की लाज, न मानो अब बिन लिये स्वराज १
पुत्र पुत्री हो तीस करोड़, बनो सब एक भेद को छोड़।
बढ़ चलो बदबद करके होड़, निरंकुशता का दो शिर फोड़॥
शक्ति का दर्प मिला दो धूर, शान्ति रक्खो सशक्ति भरपूर।
यही कहते गान्धी महाराज, न मानो अब बिन लिये स्वराज २
खूब हो खुलकर खिलकर खेल, प्रलोभन आये देना ठेल।
न अब हर्गिज होने का मेल, तप कुटी बने भले ही जेल॥
देखना होना मत तित बितर, स्वर्ग से निरख रहे हैं पितर।
कहीं मत जाना रण से भाज, न मानो अब बिन लिये स्वराज ॥३॥

स्वदेशी का वस्तर लो धार, हाथ में चरखा हो हथियार।
करो फिर असहकार का वार, हटादो सार दुर्व्यवहार॥
शूल भी होवेंगे फिर फूल, स्वार्थी मिल जायेंगे धूल।
कठिन है कौन जगत् में काज न मानो अब बिन लिये स्वराज॥

(२३)

प्रेम का प्रारम्भ।

सोचो विचारो अब, परस्पर समय लड़ने का नहीं!
निज शान पर अभिमान से, अड़ने अकड़ने का नहीं॥
भारत जननि के पुत्र हम सब, नित्य मिल जुलकर रहें।
तुम भी हमारा हित चहो, हम भी तुम्हारा हित चहें॥१॥
भारत निवासी मात्र को, निज बन्धु हम समझें सदा।
उनकी विपत्ति को हम सदा समझें हमारी आपदा॥
हम भारतीयों में परस्पर प्रेम का विस्तार हो।
इस प्रेम से ही मातृ-भू का, क्लेश से उद्धार हो॥२॥
इस परस्पर प्रीति से जग में हमारी जीत हो।
इस प्रीति को नित पुष्ट करना ही हमारी नीति हो॥
तन मन बचन से क्षेम दायक एकता का नाम हो।
तुम पर हमारा प्रेम हो, हम पर तुम्हारा प्रेम हो॥३॥
भगवन्त! भारत में परस्पर प्रेम का प्रारम्भ हो।
कर्मिष्ट हो फिर देश, दारिद्र जन्य दुख गत दम्भ हो॥
हो कर्मयोगी हम, हमारा कर्म ही आराध्य हो।
कर्तव्य निष्ठा से विगत, गौरव हमें फिर साध्य हो॥४॥

(२४)

उठो हिन्दुओं क्यों पड़े सो रहे हो।

सपूतो! सुवीरो! दशा को सुधारो,
समस्ताप के पाप को दूर टारो।
समुत्साह सानन्द प्यारे प्रचारो,
अरे हीनता दीनता को विदारो।
दुखों के गढ़े में गिरे जा रहे हो,
उठो हिन्दुओ क्यों पड़े सो रहे हो॥ १॥
कहां वीरता धीरता है तुम्हारी,
गई है अहो क्या सभी बुद्धि मारी?
घटाओं अविद्या घटा टोप छाई,
नहीं सूझती है तुम्हें हा भलाई।
महा मोह में अन्ध से हो रहे हो,
उठो हिन्दुओ क्यों पड़े सो रहे हो॥ २॥
विरोधी मतों के पथों को हटाओ,
बनो देश प्रेमी कलह को हटाओ।
सदा सत्यसेवा सुखी हो कमाओ,
न हा! भीख माँगो प्रतिष्ठा गमाओ।
वृथा वाद में वक्त को खो रहे हो,
उठो हिन्दुओ क्यों पड़े सो रहे हो॥ ३॥
फटीली फली फूट है नाशकारी,
गुलामी हमारी महा हानिकारी।
पराधीनता प्राण को ले रही है,

तुम्हें शोक सन्ताप को दे रही है।
नहीं प्रेम के बीज को बो रहे हो,
उठो हिन्दुओ क्यों पड़े सो रहे हो ॥ ४ ॥
चढ़ो स्वत्व के पन्थ में वीर आगे,
निराशा यहां से हुई दूर भागे।
स्वदेशी सुधा को पिओ विज्ञ प्यारे,
रहो धर्म की ध्वजा हाथ धारे।
प्रमादी कहाँ कालिमा धो रहे हो,
उठो हिन्दुओ क्यों पड़े सो रहे हो ॥५॥

(२५)

अरमान रह न जाये।

चुन चुन के फूल लेलो अरमान रह न जाये।
यह हिन्द का बगीचा गुलदान रह न जाये॥
यह वो चमन नहीं है लेने से होवे ऊजड़।
उल्फत का जिससे कुछ भी एहसान रह न जाये॥
कर दो जबान बन्दी जेलों में चाहे भेजो।
मादर पै होता कोई कुर्बान रह न जाये॥
छल और फरेब से तुम भारत का माल लूटो।
उसके गुजर का कोई सामान रह न जाये॥

(२६)

माता-पिता के प्रति ।

भारत तेरे कर-कमलों में सादर वन्दे करता हूँ ।
भारत तेरे पूर्व समय के कार्य्य हृदय में रखता हूँ ॥
पहले तू था जगत गुरू पर आज नहीं तू वैसा है ।
और देश पहले था जैसा घना हुआ ही तैसा है ॥ १ ॥
भारत जननी पुष्प पदों में वार वार करता वन्दे ।
ऐसा दो वरदान मातु तुं सारे दुःख पड़ जा मन्दे ॥
तेरे पुत्र मातु हैं जितने कार्य्य कुशलता दिखलावें ।
जितनी जनता निरा मूर्ख है राज नीति को सिखलावें ॥ २ ॥
जिस माता के एक पुत्र हो कष्ट दूर उसका होवे ।
बत्तिस कोटि पुत्र हैं तेरे तव भी तू नहिं सुख पावे ॥
ऐ प्रिय भाई क्या देखते हो खड़े हुए निज माता को ।
माता की चोटी पकड़े हैं, कौन दुष्ट प्रिय भ्राता को ॥ ३ ॥
शर्म नहीं नहिं ग्लानि होति कुछ प्यारे भाई जग जावो ।
अत्याचार आदि दुर्गति से कभी नहीं तुम घबरावो ॥
घोर विरोध करो सब मिलकर जिससे मिलजावे स्वराज्य ।
इस अपमान को नहीं चाहते नहीं चाहता हूँ सुराज्य ॥४ ॥

(२७)

अमन के नाम पर अन्याय ।

अमन के नाम पर अन्याय, नौकर शाह करते हैं ।
कहेगा क्या जगत् सुनकर, न कुछ परवाह करते हैं ॥

दमन की नीति का जब से, चला है चक्र भारत में।
अराजक जाते ठहराये, अगर हम आह करते हैं ॥१॥
सहस्रों शांतिप्रेमी भी सताये जाते हैं नाहक।
जो अपने जन्म स्वत्वों की, हृदय से चाह करते हैं ॥२॥
जो अपने भाषणों द्वारा, जगायें जाके जनता को।
"जबां खोलो न पबलिक में" उन्हें आगाह करते हैं ॥३॥
कभी योंही लगा लाञ्छन, चला अभियोग भी उन पर।
मजे के फैसले श्रीमान, क्या ही वाह! करते हैं ॥४॥
जमानत और मुचलके मांगते हैं नेक चलनी के।
न दें तो जेलखाने के लिये ही राह करते हैं ॥५॥
मगर यों जेलखाने से अधिक सम्मान बढ़ता है।
जिसे वे देख कर दूनी दिलों में डाह करते हैं ॥ ६ ॥
हमारी शान्ति रक्षा की बढ़ी है वे तरह चिन्ता।
फँसाकर लोभियों को वे हमें गुमराह करते हैं ॥७॥
सभाएँ शान्ति की करवा, सुनाते स्वार्थ की बातें।
दया दिखलाते हैं वे या जले पर दाह करते हैं ॥८॥
सजग हो, किन्तु, अब हम भी समझने सब लगे बातें।
हितैषी कार्यों में ही प्रकट उत्साह करते हैं ॥ ६ ॥

(२८)

स्वार्थ जीवन ।

करूंगा सेवा स्वदेश भू की, इसी में तन मन लगाऊँगा मैं ।
अछूत की छूत छोड़ छन में, स्वभ्रात अपना मिलाऊँगा मैं ॥१॥
स्वदेशी पानी स्वदेशी भोजन, स्वदेशी होगा स्वध्येय अपना ।
स्वदेश भारत की रज को लेकर, भभूत इसकी लगाऊँगा मैं॥२॥
स्वदेश भ्राताँ से प्रीति जोड़ूं, न देश का ध्यान धर्म्म छोड़ूं ।
सभी तरह से स्वतन्त्र बनकर, स्वराष्ट्र-वीणा बजाऊँगा मैं ॥३॥
तजूं विदेशी लिबास अपने, स्वदेशी चर्खा चला चला कर ।
बना के कपड़े सभी तरह के, विदेशियों को छकाऊँगा मैं ॥४॥
स्वदेश प्रेमी सभी सुहृद गण, सभी नहीं कुछ बिछुड़ गये हैं ।
स्वराज्य लेकर के दिल से उनको, सुप्रेम अपना दिखाऊंगा मैं५
दमन से क्या होगा हैं भमन से, डरूँगा हरगिज नहीं दमन से ।
दमन की जड़ को विनाश करके, सफल स्वजीवन बनाऊँगा मैं ॥६॥
करूँगा गाँधी का ध्यान निशिदिन, उन्हीं से मेरी लगन लगी है ।
उन्हीं के तेजो प्रताप बल से, स्वराज्य-झंडा उड़ाऊंगा मैं ॥७॥
जगत् में विजयी बनूँगा मैं भी, स्वराज्य सूरज से तम हटाकर
बढ़ाके भारत का शिल्प कौशल, पुराना गौरव दिखाऊँगा मैं ८

(२९)

पथिक।

पथिक तुम फिर जाओ निज ग्राम-
यहां न ठहरो इस उपवन में, नहीं सुखद विश्राम॥ पथिक०
नहीं रहा अब यह उपवन का प्यारा सुखद वसन्त।
कर डाला दुर्मति मालीने इसकी श्री का अन्त॥ पथिक०
तोड़े हुए कहीं हैं पल्लव, मसले अनुपम फूल।
टूटी हुई कहीं पर कलियाँ, फाँक रही हैं धूल॥ पथिक०
हरे! फलों का हाय! हुआ है कैसा करुण विनाश।
नष्ट हुए हैं कहीं अभागी चिड़ियों की आवाज॥ पथिक०
उजड़ा पुजड़ा दीख रहा है, हाय मालती कुञ्ज।
जिसे प्यार अतिशय करता था, शोकित प्रणयी पुञ्ज॥ पथिक०
बह रहा है सब ओर भयानक अत्याचार-समीर।
मौन हुए वे मधुर चहकने वाले सुन्दर कीर॥ पथिक०
कौन करेगा स्वागत तेरा, यहाँ अतिथि अज्ञान।
लौटो दु:खित हृदय से होगा क्या आतिथ्य प्रदान॥ पथिक०

—:०-०:—

(३०)

तब भारतीय कहलाऊँ मैं।
माया मद मोह भगा देना। नव जीवन ज्योति जगा देना॥
भारत स्वाधीन बना लेना। अपना उद्देश्य बनाऊँ मैं॥१॥ तब०-
जुल्मों का जोर घटाऊँगा। स्वेच्छों का मान मिटाऊँगा॥
ईर्षा, हठहास्य हटाऊँगा। यह जीवन ध्येय बनाऊँ मैं॥२॥ तब०-

उन्नति का पाठ पढ़ाऊँगा। "मिलजाओ" मंत्र रटाऊँगा॥
घर २ नवगीत सुनाऊँगा। यह निज कर्त्तव्य बनाऊँ मैं ॥३॥ तब०
सब जगको निज मन्दिर मानूँ। परतिय को जननी सम जानूँ॥
सबको स्नेह रस में सानूं। अपना चरित्र बनाऊँ मैं॥४॥ तब०
दारुण दुःख देख न भागूँ मैं। हिंसा से हृदय न पागूँ मैं॥
सत पथ पर जीवनत्यागूं मैं।अपना कर्त्तव्य निभाऊँ मैं॥५॥तब०
जेलों का जाल जलाने को। तोपों का ताप बुझाने को॥
ढोंगों के दुर्ग ढहाने को। आत्मिक बलको अपनाऊँ मैं॥६॥तब०
कौंसिल फरमान सुधारों से। कतिपय फरमावरदारों से।
टट्टी की ओट शिकारों से।भी बाल बाल बच जाऊँ मैं॥७॥तब०
भारत, हित जीवन धारा है। भारत सर्वस्व हमारा है॥
भारत संसार सहारा है। भारत हित प्राण गवाऊँ मैं॥ ८॥
तब भारतीय कहलाऊं मैं।

(३१)

प्रबोधन।

छात्र गण! बनो आज प्रहलाद।
"गांधी" के गौरव की गरिमा चहुँदिशि करे निनाद।
उनके पथ पर ही चलना है बनना है आजाद॥१॥छात्र०
बन्धन में पड़ शिक्षा लेना होना है बरबाद।

पिता पुत्र को स्वयम् रोकदे करे न वाद विवाद ॥२॥छात्र०
किन्तु पिता जो नहीं चाहते स्वतन्त्रता का स्वाद ।
ऐसे समय पुत्र को वेशक बनना है प्रहलाद ॥३॥छात्र०
दास्य भाव कपूर बनेगा भूले सभी प्रमाद ।
भारत जन्म—स्वत्व पावेगा होवेगा आह्लाद ॥४॥ छात्र०

(३२)

देश भक्त क़ैदी जेल में ।

खुश हो के मूँज कूटेंगे चक्की चलायेंगे ।
फोल्हू कुआँ खरास खुशी से पिरोयेंगे ।
जिन्हा की कची रोटियाँ खुशहोके खाये गे ।
और भूने चने कोभी खुशी सेचवाये गे ।
रंजो गमों अलम में भी खुशियाँ मनाये गे ,
सख्ती तमाम, झेलेंगे कड़ियाँ उठाये गे ॥
दर्दों महन में तर्कस के न गर्दन झुकाये गे ।
मूछों पै ताव दे गे अकड़ भी फिरायेंगे ॥
खुद सह के जुल्म २ की हस्ती मिटाये गे ।
भारत के हालेजार को वेहतर बनाये गे ॥

(३२)

शक्ति-सन्देश।

भड़को ससार पलटता है, दहलो आंधी का झोंका है।
प्रह्लाद प्राण तन तोड चलो, त्र्यम्बक गान्धी का झोंका है॥
लाखों भूधर थर्राते हैं, लाखों द्रुम टूट टूट पडते।
वीणाएं गुञ्ज मचाती हैं, वज्रों से बाण टूट पडते॥
हाँ वीर बनो हथिआर न लो, कष्टों की मुण्ड माल पहिनो।
तो भार करोडों मोलों का, सुयश का विजय माल पहिनो॥
चढ जाओ इस बलिवेदी पर जय, जय स्वदेश जय बोल चलो।
मिट जाओ कर्म क्षेत्र है यह लाखों दल मंडल डोल चलो॥
मैं देखूँगी इस सत्य समर पर, ऐ प्यारो खिलवार करो।
मैं सीचूंगी तन शोणित से तुम पूर्ण अहिन्सक वार करो॥
मैं यहाँ हिंडोला झूलूँगी, तुम ऐक्य हिंडोला बनवाओ।
मैं यहाँ फलूँगी फूलूँगी बच्चो तुम मत घबराओ॥
यह शिशिर तुम्हारा मिटता है ऋतुराज समंगल आता है।
सुख स्वराज्य की मधुर नाच यह "मोहन कोकिल" गाता है॥
हाँ बढो देर क्यों करते हो बस यही समय है काम करो।
बढ चलो खडी यह माँ व्याकुल हो विजय रूपा श्री राम करो॥

* *

(३४)

अनुरोध।

करो कुछ देश हित भ्राता ! अगर आये हो दुनिया में।
निछावर देश पर सर कर निशाँ रखने को दुनिया में॥
भलाई कर चलो सब पर तुम्हारा भी भला होगा।
भलाई के लिये सर दे दिये लाखों ने दुनिया में॥
अगर इच्छा तुम्हारी है तरक्की हिन्द की होवे।
हटाओ मत कदम पीछे बढ़ाओ नाम दुनिया में॥
जरूरत है कि हो कुर्बानियाँ भारत पै लाखों की।
फ़कीरी धार लो भारत का यश रखने को दुनिया में॥
जो करना चाहो कर लो आज फिर कल का भरोसा क्या ?
समय गुजरा नहीं आता सुना हम ने न दुनिया में॥
ये तोड़ो दासता की बेड़ियाँ स्वाधीनता ले लो।
वतन का राग घर घर में सुनाओ सारी दुनिया में॥

* * *

(३५)

बैठे हैं।

हमें यह गर सताने के लिये तैयार बैठे हैं।
शहीदाने वतन हम भी यहां तैयार बैठे हैं॥१॥
चुँगा मुँह से न निकलेगी ये तन की धज्जियाँ करदो।
पिन्हा दो हथकड़ी बेड़ी किये इसरार बैठे हैं॥२॥
असहयोगी बने हैं हम किया एलान दुनिया में।
हमारे कत्ल को कबसे लिये तलवार बैठे हैं॥३॥

दुखाना दिल को जो चाहे न अरमाँ दिल में रहजाये ।
मिटाकर खाक कर देना, सरे बाजार बैठे हैं ॥४॥
रिहा करदो तो वे बोले "नहीं मुद्दत अभी गुजरी ।"
खुदा जाने कि क्यों हम से किये तकरार बैठे हैं ॥५॥

* * *

(३६)

श्रीयुत महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गान्धी ।

श्री हीन भारत की धरा परदेशियों ने कर दिया ।
यु रप प्रभृति देशों ने भारत का खज़ाना हर लिया ॥
त म देश में बढ़ता गया परतन्त्रता के दुःख से ।
म रने लगे जब भारतीय अकाल मय दुर्भिक्ष से ॥१॥
हा अन्न ! हा !! हा !!! वस्त्र को भारत तरसने लग गया ।
त त्काल भारत दासता के रंग में था रंग गया ॥
मां भारती के दुःख हरने का समय जब आ गया ।
मो हन लिये अवतार तब आनन्द घर घर छा गया ॥२॥
ह म भारतीयों से किया प्रण था जो गीता ग्रन्थ में ।
न र रूप धारण कर किया पूरा उसी को अन्त में ॥
दा सत्व की बेड़ी कटेगी अब तुम्हारे हाथ ही ।
स म्मान,पायेंगी जगत में "भारतीमाँ" साथही ॥३॥
क र्तव्य कर दिखला दिया आदर्श भारतवर्ष का ।

र क्खी न कोई भी कसर इसके अतुल उत्कर्ष का ॥
न न से बचन से शर्म से भारत का हित चिन्तन किया ।
च मका दिया भारत का गौरव रवि जुड़ाया माँ हिया ४
न र देव की जब घोषणा सहकारिता के त्याग का ।
दर्शन किया भारत सभी शुभ "राम-राज्य"-"स्वराज्य" का ।
गा ते मनुज क्या देव भी गुण गान तेरा स्वर्ग में ।
न भ में तलातल में अतल पाताल में अपवर्ग में ॥ ५ ॥
धी धैर्य तेरा देख कर संसार विस्मित हो गया ।
गान्धी सुयश बढ़ने लगा मद मूर्ख—जन का खो गया ॥
जय जन्म—भू की बोल कर कह करके वन्दे मातरम् ।
विदा है "भारतीय—किसान" बन्दे मातरम् ॥६॥

(३७)

जयनाद ।

जय जय भारत जननि ! सकल सन्ताप निवारिणी ।
रिपु दल दलनि ! प्रचण्डि ! समर रुद्राकृति धारिणी ॥
मलय पवन में मन्द मन्द स्वच्छन्द विहारिणी ।
गुण गण-गौरवगरिमा ! धवल सुयश विस्तारिणी ॥
माता दो आशीष यह स्वालम्ब-शिक्षा पढ़ें ।
दृढ़ बन कर होकर खड़े, आगे बढ़ ऊँचे चढ़ें ॥ १ ॥

(३८)

कपटी कुत्ते।

कुत्ते व्यर्थ आज चिल्लाते।

बेइमान संरक्षक से तुम, कुछ कवरे ही पाते,
टुक टुक ? खोर इसी टुकड़े पर चलते हो इतराते। कुत्ते व्यर्थ०—
सत पथ पर चलते लख हमको देख देख गुर्राते,
रक्षक तेरे डांका देते, उन्हें न चोर बताते। कुत्ते व्यर्थ०—
दीन जनों का सर्वस हरकर हो, निज घर ले जाते,
देख रहे हो, यह अधर्म पर, जरा न जीभ डुलाते। कुत्ते व्यर्थ०—
अरे नीच, अन्यायी मनमें, तनिक न हो शर्माते,-
धर्म, न्याय अरु जाति गले पर, छूरी नित्य चलाते। कुत्ते व्यर्थ०—
हाँव हाँव बक, बने 'बहादुर'-डपटे जुते खाते,
पराधीन हो, दास्य-शृंखला पहन गले मदमाते। कुत्ते व्यर्थ०—
"आ.! तू!" कहने पर बस दौड़े पूँछ हिलाते जाते,
शीश नवाते हाथ उठाते, गौरव जाति गँवाते। कुत्ते व्यर्थ०—
भाई बन्धु को काट गिराते, आँखें लाल दिखाते,
औरों के पद नित्य चूमते, जूते तक सुहराते। कुत्ते व्यर्थ०—
लाज न आती मुंह दिखलाते और गुलाम कहाते,
रे उल्लू, चिल्लू भर जल में, डूब न क्यों मरजाते। कुत्ते व्यर्थ०-

(३६)

हमारा कर्तव्य।

उठो वीर गण! जीवन रण में आज तुम्हें पग धरना है।
मातृ-भूमि की बलि-वेदी पर हँसते हँसते मरना है।

बढ़ कर शान्त स्वध्येय समर में घुस कर पार उतरना है।
करना है स्वतन्त्र भारत को उसका ही दम भरना है॥
प्यारे पीड़ित बन्धु जनों को अपने गले लगायेंगे।
इस में अगर पाप कोई है पापी भी कहलायेंगे।
कष्टों पर हो कष्ट किन्तु हम कभी नहीं घबरायेंगे।
अपनी शुभ जीवन यात्रा पर जायेंगे फिर आयेंगे।
जंजीरों की झनकारों पर गीत सुरीले गायेंगे!
होगा अगर जेल को जाना तो सहर्ष हम जायेंगे।
है मनुष्य क्या चीज़ सत्य पर यम से भी भिड़ जायेंगे।
अपने निश्चित धर्म मार्ग से कभी न पैर हटायेंगे।
हैं हम ऋषि सन्तान जगत् को हमें यही दिखलाना है।
देशी हम हैं, देशी भाषा, देशी ही सब बाना है।
है स्वराज्य ही ध्येय हमारा उसका ही व्रत ठाना है।
अपने संयम, त्याग, शान्ति से राम-राज्य फिर लाना है॥

*

(४०)

चेतावनी।

आ जाओ अब न्याय-मार्ग पर, न्याय तुम्हें करना होगा।
कंटक पूर्ण हो गया वह, अब सम्हल पैर धरना होगा॥
कतर-ब्योंत की बातें करके नहीं चाल चलना होगा।
ऐसा नहीं हुआ तो फिर भी, तुम्हें हाथ मलना होगा॥
लुभा, डरा, धमका अब तुमको शान्ति-पाठ पढ़ना होगा।
लेने के दिन गये गजब के देने को बढ़ना होगा॥

दुखी देश के दीर्घ दुर्दशा दुःख दर्द हरना होगा ।
भारत को अपना कर तुमको स्वार्थ त्याग करना होगा ॥
अनुचित कार्य अधर्म अनय से सदा तुम्हें डरना होगा ।
भारत-नेता की आज्ञा को सदा शीश धरना होगा ॥
राग द्वेष को दूर भगा कर भेद-बुद्धि तजना होगा ।
भारत-भूमि भलाई के ही सभी साज सजना होगा ॥
शुद्ध हृदय से, सद्भावों से भारत को जपना होगा ।
नहीं, तुम्हारे लिए हमारा भारत फिर सपना होगा ॥

*   *   *

(४१)

उद्बोधन ।

सखे ! दिल खोल देना, जान देदेना, न बक करना ।
सुना कर दर्द माता का तलातल तक हिला देना ॥
तुम्हें उपहार होगी जेल पर, परवाह मत करना ।
वतन के रंजोगम की याद दुनिया को दिला देना ॥
बुरा है बैठना पल भर ठगे से कष्ट कुटिया में ।
समर में स्वत्व के डटकर करामातें दिखा देना ॥
उठानी जिन्दगी भर यों नहीं शर्मिन्दगी अच्छी ।
बनो आज़ाद आलम में विजय-झण्डे उड़ा देना ॥
कटेंगे अङ्ग, छूटे सङ्ग, होंगी बंग, कुल कौमें ।
बने मदहोश अपने दर्द की खुद ही दवा होना ॥
तमन्ना हर अदा से औ हँसी लब पर सदा टपके ।
जहाँ काँटे बिछे हों प्रेम के बल बीज बो देना ॥

सँभल कर देश के कारण सखे! धूनी रमा लेना।
हठीले! हाथ से आज़ाद हिन्दुस्तान कर देना॥
न हों व्रत भंग, जगदीश्वर करे ऐसी न हों घड़ियां।
मिटा कर दर्द दिल अपना अमर इतिहास लिख देना॥

* * *

(४२)

धर्म चौकीदारों की टेर।

लोहे के चने चबायेंगे, हम नंगे उमर वितायेंगे।
पर भूल विदेशी तागे को निज तन से नहीं लगायेंगे॥
इस सूत पै भोजन पान दिया ईमान दिया फिर प्राण दिया।
निज प्यारा हिंदुस्तान दिया, इससे क्या अधिक गवायेंगे॥
इस माँडी की वह चिकनाई, जिस माँड़ी के बलसे आई।
छू कर हिन्दू मुस्लिम भाई क्या अपना धर्म गवायेंगे॥
धन दौलत दुनिया माल, आयेगा तब किस काम बता।
पैसे ले बेचे धर्म तो क्या मालिक को मुंह दिखलायेंगे॥
गो माता निज माता को या भारत भूमी माता को।
जो पैसे लेकर बेचत हैं, वे भी क्या मनुज कहायेंगे?
फटकार सहें या मार सहें दुर्वाक्यों की बौछार सहें।
पर सभी बीच बजार कहें हम सच्चा धर्म बतायेंगे॥
तुम भारत के सुखदायी हो, जैसे हो अपने भाई हो।
इस नाते देख कुमारग चलते, तुमको हम समझायेंगे॥
तजदें व्यापार विदेशी का, हम रक्षा करें स्वदेशी की।
निज देश-प्रेम की सूतमें बंध, भारत स्वराज्य फिर लायेंगे॥

इस्लाम का भी ईमान रहे, हिन्दू के धर्म का मान रहे।
रूई गैया धन धान रहे, रक्षा में हम मिट जायेंगे॥
हिन्दू मुस्लिम सब नर नारी, ग्राहक दलाल या व्यापारी।
हम एक ही भारतके वासी निज देशहितमर मिटजायेंगे॥

(४३)

मेरा कौल ।

तमन्ना है यह मरकर भी चलन अपना स्वदेशी हो।
मज़ा मरने में आये गर कफ़न अपना स्वदेशी हो॥
गिला कैसा ? कहाँ का रञ्ज हम काले ही अच्छे हैं।
बुरा क्यों हो जो यह रंगे बदन अपना स्वदेशी हो॥
विदेशी लैम्प को छोड़ें यह अन्धी रोशनी छोड़ें।
दुआ माँगें चिरागे अञ्जुमन अपना स्वदेशी हो॥
यह कोट कालर वो नेकटाई चमकते बूट डासन के।
लिबास अपना स्वदेशी हो पहिरन अपना स्वदेशी हो॥
कहाँ की है यह मोटर कार, सोडा लेमोनेड बिस्कुट।
फिटन अपना स्वदेशी हो, टिफन अपना स्वदेशी हो॥
दुआ है बाद मरने के, स्वदेशी रोयें मौयत पर।
के सर तापा हरेक आलम वतन अपना स्वदेशी हो॥
यही है आरजू या रब, चलन अपना स्वदेशी हो।
यह दिल अपना स्वदेशी हो, दहन अपना स्वदेशी हो॥
मुहब्बे हिन्द शादे मेरठी का कौल है सुन लो।
जुबाँ अपनी स्वदेशी हो, सखुन अपना स्वदेशी हो॥

(४४)

विजय होवे।

हमारे पूज्य "गांधी" की समर-भू में विजय होवे।
लडे रण में असहयोगी सदा इनको विजय होवे ॥ १ ॥
नहीं मरने, का डर-हमको चलावो तोप बन्दूकें।
हमारे खून की नदियाँ, बहाओ जितना जी चाहे ॥ २ ॥
ये घुडकी बन्दूगों की तुम, हमें अब क्यों दिखाते हो।
चलाओ गोलियाँ हमपर तुम्हारा जितना जी चाहे॥ ३ ॥
नहीं अब हिन्द निर्बल है वीर नेता मदद पर हैं।
साथ हैं मित्र दल इनके तो फिर क्यों ना विजय होवे ॥ ४ ॥
अरे तारा गणों तुम टिम टिमा कर क्यों चिढाते हो।
उदय होते ही सूरज के तुम्हारा क्या गुजर होवे ॥ ५ ॥

(४५)

भ्रातृ-सन्देश।

आओ! हे प्रिय भ्रात! देश की दशा सुधारें।
"असहयोग" अनिवार्य्य कार्य्य है, इसे प्रचारें ॥
डग मग भारत नाव इसे अब पार लगावें।
माता का शुचि प्रेम, जगत भर में फैलावें ॥
दीन दु:खी इसदेश की—पुण्य भूमि रचित करें।
विषम व्यथा निजमातु की, तन मन धन सब देहरें ॥ १ ॥
स्वार्थ त्याग निज देश-धर्म हित मरना सीखो।
नेता जो कुछ कहें उसी पर चलना सीखो ॥

आया है शुभ समय कार्य्य करके दिखलावो।
माता के इस दुखित समय में हाथ बटावो॥
निज माँ हित बलिदान हो, निज माँ मुख उज्वल
माँकी गोदासीन हो, पुत्रवती का सुख भरो॥२।
सत्याग्रह शुचि मार्ग इसे हम सब अपनावें।
अत्याचारी आदि जनों को मजा चखावें॥
छोड़ विदेशी राह स्वदेशी कारज करना।
गांधी का आदेश मान निज भूहित मरना॥
नौकरशाही रो उठे, कार्य्य करें हम सब यही।
आर्य्य देश फिर लह उठे, अन्तिम अवसर है यही॥३॥
शुद्ध स्वदेशी वस्त्र बनाकर द्रव्य बचावें।
होयँ विदेशी वस्त्र उसे हम जल्द हटावें॥
निशैले जो चीज उन्हें तुम दूर भगावो।
अन्यायियों का कभी नहीं तुम हाथ बटावो॥
आत्मिकबल को प्रौढ़ कर, करें हिन्द आज़ाद अब।
जो कुछ दिन निःसार थी, करदें सब आबाद अब॥४॥

(४६)

बलिवेदी।

बीर कहो, क्या यही वेदिका है जहां,
तुमने जीवन यज्ञ किया था देशहित।
कहिये! ये रंग स्थल वेही हैं जहां,
भारत का रोमांचकार अभिनय हुआ॥
अमृत सर! क्या तेरे ही सर में कभी,
भारत बीरों का सर था डाला गया?

जो कवन्ध बन जीवन नृत्य दिखा रहा,
स्मृति रूप में अद्यावधि इस देश को ॥
धीर तुम्हारी याद जगा रही—
नये नये भावों को नये उमंग को ।
जिसके बल मृत्यु मुरली की मूर्च्छना,
जीवन स्वर में मिलकर गीत सुनारही
वीर ! देख लो !! हृदय खोलकर आंखभर,
आये हैं हम बन्धु तुम्हारे द्वार पर !
लेकर सम वेदना हृदय में, नयन में,
नीर क्षीण स्वर अपने गद्गद् कंठ में ॥
आह भरे शब्दों में कहते हैं प्रभो,
उनकी आत्माओं को शाश्वत शान्ति दो
ऐसा करो, कि होकर अमर शहीद वे,
भारत मां का सब विधि मंगल करें ॥

(४७)

दीन-निहोरा ।

दया दिखलाओ नन्दकिशोर !
विलप रहा है देश हमारा पाकर कष्ट अघोर ।
हाय दयामय, कहला कर तुम बनो न नाथ कठोर ॥ दया०
नश्वर भारत में होता है अब अनर्थ अति घोर ।
ऐसे दुःख में किसे पुकारें हे ! गोपी चित चोर ॥ दया०
हे करुणा मय ! कहां पड़ा हूँ देखो मेरी ओर ।
सुनो नाथ ! मत देर लगावो कहता हूँ कर जोर ॥ दया०

(४८)

ध्येय।

जयति जय मेरे हिन्दुस्तान, यही होगा मम जीवन गान।
इसी से पाया तन मन प्राण, इसी पर फिर होगा बलिदान॥
कला कौशल वैभव गुणवान-आत्मबल साहस शक्ति निधान।
जगत बिच विजयी राष्ट्र प्रधान, बनायेंगे हम हिन्दुस्तान॥
करेंगे दुखित बन्धु का त्राण, बढ़ायेंगे गौरव सम्मान।
न होने देंगे अब अपमान, करेंगे अपना देश महान॥
कुली हो या मजदूर किसान, न होने देंगे भेद विधान॥
मिटा देंगे सत्ता की शान, बटा देंगे सब स्वत्व समान।

---

(४६)

सुन्दर स्वदेशी की पताका फहराने दो।

मनुज बने हो तो न भूलो मनुजत्व कभी,
भीरुता की भूतिनी को पास मत आने दो।
आरती उतारो मातृ-मन्दिर में भारती की,
आशा मातृ भाषा की अवश्य लहराने दो॥
भूल मत जावो अपनाओ गत गौरव को,
गावो गावो देश राग साहस न जाने दो।
"रसिकेन्द्र" आलस में भूलो मत और अब,
सुन्दर स्वदेशी की पताका फहराने दो॥ १॥

(५०)
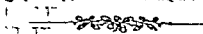
हृदयोद्गार ।

भेद भावों का हो विच्छेद, प्रेम मय हो सबही व्यौहार ।
प्रकट हो वीर भाव स्वातंत्र्य, दूर हो सारा अत्याचार ॥
ज्ञान का फैले शुचि आलोक, अविद्या तमका हो अवसान ।
सीख लें शिल्प कला विज्ञान, मातृ भाषा का हो सम्मान ॥
स्वावलम्बी हों भारत-वीर, हृदय में बहे प्रेम-रस धार ।
शीघ्र हो भारत का उत्थान, प्राप्त हों मानवीय अधिकार ॥

(५१)

सदिच्छा ।

करें हम सदा देश कल्यान, दयामय दीजे यह वरदान ।
क्षुद्रता कलह कुटिलता त्याग, अलापें देश भक्ति-का राग ॥
प्राप्त कर मानवीय अधिकार, खोलदें उन्नति के सब द्वार ।
धीर पौरुषी बने बलवन्त, सुयश चमकायें पुनः दिगन्त ॥
मिले आत्मिक बल शक्ति महान, दया मय दीजे यह वरदान ॥१॥
देश का गौरव देखें नेत्र, श्रवण शुचि सुनें प्रताप पवित्र ।
देश हित काम करें अविराम, हमारे हाथ सुनो घनश्याम ॥
हमारे प्राणों का आधार, त्यक्त हो कभी न देश दुलार ।
भारतीय करें देश गुण-गान, दयामय दीजे यह वरदान ॥२॥
सत्य आग्रह से हो आह्लाद, प्रतिज्ञा पालें बन प्रह्लाद ।
विघ्न भय बाधा मय यह भ्रान्ति, भगे कायरता फूट अशान्ति ॥
निराशा हो जाये निशेष, हमारा फूले फले स्वदेश ।
न भूले आर्य्य रक्त का ध्यान, दयामय दीजे यह वरदान ॥३॥

(५२)

युवक-सन्देश।

प्यारा भारतवर्ष तुम्हारा, असीम कष्ट है झेल रहा।
इसका कारण सिर्फ यही है, हम सब में दुर्मेल रहा ॥१॥
आओ ! प्यारे बन्धु गणों, अब कठिन कार्य्य करना होगा।
निज जननी की विषम व्यथा को, शिघ्र तुम्हें हरना होगा ॥२॥
माँ हित मरना मां हित, सुख स्वराज्य लेना होगा।
गांधी जी के अमिट मार्ग पर, हिल मिल कर चलना होगा ॥३॥
पराधीन जो रहता नर है, श्वान वही कहलाता है।
टे जूते खाय नित्य पर, तनिक नहीं शर्माता है ॥४॥
अर्जुन भीम करण के वंशज हो क्यों तुम गम खाओगे।
कूद पडौ मैदान क्षेत्र में, सुख सम्मृद्धि फिर पाओगे ॥५॥
सत्याग्रह के छिपे न्याय को, फिर अंकित करना होगा।
प्रहलादादिक भक्त जनों का, नूतन गृह रचना होगा ॥६॥
शिल्प कला की उन्नति करके, गया समय लाना होगा।
गर्दन चाहे कट जा तेरी, विजित पथ गहना होगा ॥७॥
जेल और सूली को समझो, यही परीक्षा का दिन है।
गुप्त मन्त्र का जप कर लेना, यही सुदिक्षा का दिन है ॥८॥
ईश्वर से है यही प्रार्थना, दीन देश यह जग जावे।
गई स्वतंत्रता देश हमारा, फिर से जल्दी ले लेवे ॥९॥

(५३)

एक अबला की पावन प्रतिज्ञा—

हो कर चित्त प्रसन्न ... करके व्रत पावन आज रहेंगी।
वस्तु विदेशी छुयेंगी नहीं अब देश के होके मिजाज रहेंगी॥
लाज नहीं ढकने को हम दूसरों की मोहताज रहेंगी।
कातने को चरखे कटिबद्ध सहर्ष सदा ससमाज रहेंगी॥
यों गिरी हाः जितना उतना सब साज के उन्नत साज रहेंगी।
नित्य विलासिता सागर मध्य डुबोतीं न द्रव्य जहाज रहेंगी॥
देख के देश वृथा अति दीन नहीं धन कोढ़ के खाज रहेंगी।
पीछे रहेंगी किसीसे नहीं अब तो अबला सरताज रहेंगी॥
भर जायगी भाव स्वदेश ही के मन देश की मूर्ति बिराज रहेंगी।
नहीं भायेंगी वस्तु विदेशी हमें अब देशी ही में छवि छाज रहेंगी॥
हुआ जो कुछ हो गया किन्तु नहीं गिरतीं बुद्धिपै गाज रहेंगी।
पहिनेंगी विदेशियों की चुड़ियां हम कैसे भला फिर लाज रहेंगी॥

(५४)

जिज्ञासा।

वही स्वातन्त्र्य की वंशी बजाते क्यों नहीं मोहन।
जिसे सुन थे सदा दुःख जाल जग के टूटते मोहन॥
वनों में घूमते स्वच्छन्द, तानों को सुना करके।
न क्यों फिर फूँक जाते, प्रेम की बिजली यहाँ मोहन॥
सभी चैतन्य जड़ भी मोह जाते थे जिसे सुनकर।
वही फिर एकता की धुन सुनाते क्यों नहीं मोहन॥
इसी को फिर बदल करके बना गंभीर शंख-स्वर।
दनुज अन्याय से जग को, बचाते क्यों नहीं मोहन॥

(५५)

स्वार्थ बलिदान।

करो तुम आज स्वार्थ बलिदान।
अपनी उन्नति और देश का जो चाहो उत्थान।
करो कार्य्य निःस्वार्थ भाव से जो चाहो कल्यान॥
मातृभूमि की यश-भूमि का कर सच्चा सम्मान।
धन मन वारो, वीर ! उठो अब करो आत्म का दान॥
गहो मार्ग कर्त्तव्य कार्य का फल का धरो न ध्यान।
बन कर सत्यदेव के सेवक लहो जगत में मान॥
यह-जीवन पथ है कण्टक मय बाधा विघ्न महान।
[illegible] चलो, परवाह न करना हैं रक्षक भगवान्॥

(५६)

असहयोग का ठान।

ठना है असहयोग का ठान।
लहर रही है छटा इसी की चौंका हिन्दुस्तान॥ ठना है०
आजिज आया मिन्नत करके, रोकर खोया मान।
तन धन देकर उलटा पाया रौलेट ऐक्ट निदान॥ ठना है०
जलियाँ वाला बाग बन गया हाय खून की खान।
कहना सुनना सभी बह गया बनकर रुदन समान॥ ठना है०
अधिकारी गण लगे ऐंठसे दिखलाने निज शान।
इसी शान ने उठा दिया है यह नूतन तूफान॥
ठना है असहयोग का ठान।

मुद्दत में यह मंत्र मिला है करने को उत्थान।
अब नाहक दिल जला रहे हैं अपनी त्यौरी तान ॥ ठना है०
कैसे मिल कर रहें, न देता, है कोई जब ध्यान।
अपने मद में फूल रहे हैं भूल रहे हैं ज्ञान ॥ ठना है०
दूर! दूर!! करने वाली अबतक पड़ी उन्हें है बान।
और इधर अब आर्य्य-रक्त का प्रगटा तेजमहान ॥ ठना है०
स्वतंत्रता का असहयोग ने, किया पूर्ण आह्वान।
भारत का प्रण पूरा होवे, है बस तब कल्याण ॥
ठना है असहयोग का ठान ॥

(५७)

असहयोगी के उद्‌गार।

अब तो हम सन्यास लेंगे, देश के खातिर जरूर।
कोई हो नाराज या खुश, कुछ न इसकी है जरूर ॥१॥
अब नहीं परवा मुझे अच्छा बुरा कोई कहे।
देश के उन्नति विधायक, कर्म कर दूंगा जरूर ॥२॥
स्वार्थ रत माता पिता, भ्राता सुता सुत नारि है।
मोह माया लोभ लालच, त्याग दूंगा मैं जरूर ॥३॥
हों विदेशी वस्तुएँ, बहुमूल्य वे कीमत मिले।
पर स्वदेशी ही सदा, बरतूंगा अब तो मैं जरूर ॥४॥
प्राण-प्यारे भाइयों को, पुलिस पल्टन आदि से॥
कर अलग कर बन्दकर ही, सत्य दिखला दूं जरूर ॥५॥
इस तरह करते हुए, यदि जेल में जाना पड़े।
कुछ नहीं परवा मुझे, आनन्द होवेगा जरूर ॥६॥

जेल की तो बात ही क्या, बम मशीनों आदि मे।
जो मुझे उड़ना पड़े, उड़ जाउंगा हंसकर जरूर ॥७॥
मेरे कतरे खून से लाखों, बनेंगे राम कृष्ण।
राक्षसों और कौरवोंका नाश कर दूंगा जरूर ॥८॥
क्रोध लाऊंगा नहीं, क्षण मात्र के भी वास्ते।
एक ईश्वर के सिवा पर और ना समझूं जरूर ॥९॥

---

(५८)

अड़े रहेंगे।

उठायेंगे कब तलक मुसीबत, गमो में कब तक पड़े रहेंगे।
ये शेरे हिन्दुस्तान कब तक झुकाये सर को खड़े रहेंगे ॥
नहीं है मुमकिन रखेगा हमसे हमेशा दौरे ज़मा अदावत।
ये कौन कहता है अब हमेशा दिलों पै पत्थर धरे रहेंगे ॥
मकान बख्सा जिसे खुदाने, मकां के बाहर पड़े हुए हैं।
भला जो मालिक है कबतलक वे मकां के बाहर खड़े रहेंगे ॥
गुलाम जिसने बनाया हमको, है उसका बर्ताव दुश्मनी का।
है शर्म इस परभी गर उसी के, हम दोस्त मुतल्लिक बने रहेंगे ॥
छुडा के गफलत की नींद अब हम, उठेंगे देखेंगे रगे दुनियां।
जिन्दा कहाके मिसाले मुर्दा न कब्र में अब पड़े रहेंगे ॥
कोशिश करेगी तो एक चिउँटी, ही करके हाथी को नाकमेंदम।
फिर हम तो इन्सां हैं, दूसरे से, बताओ कब तक डरे रहेंगे ॥
बस अब तो "बे अकल" कसम खाये नहीं रहेंगे गुलाम इनके।
गले पै खञर भी ये चला दें, नहीं डरेंगे अड़े रहेंगे ॥

(५६)

स्वदेश।

हे मेरे प्रिय प्राण स्वदेश !

अज दिलीप, रघु, रामचन्द्र के, परमपूज्य प्राणेश।
यह गौरव गिरि गगनविहारी, धवल कीर्ति राकेश॥
सुर दुर्लभ सुखशांति सदन वह वैभव विपुल विशेष।
वह छवि निर्मल रुचिर तिहारी, पावन सुन्दर वेष॥
अविचल भक्ति हृदय उपजाता, करता सब दुःख शेष।
मोद मत्त आनन्द मुग्ध मन चूमि चरण हृदयेश।
ताली दै दै नाचत गावत, जय जय भारत देश।
हे मेरे प्रिय प्राण स्वदेश !

(६०)

स्वाधीनता।

होय न जिनको व्यसन बात कोरी करने का।
सीखे हों जो पाठ न गैरों से डरने का॥
जिन को किञ्चित खेद नहीं जीने मरने का।
सत्पथ मे हो ध्यान पग न पीछे धरने का॥
मातृ प्रेमवश ठानलें, कार्य-क्षेत्र प्रवेश को।
है बस उनके हाथ में, स्वाधीनता स्वदेश को॥१॥

(६१)

स्वदेशी की बहार ।

दूर कर देगा देशतम को स्वदेशी स्नेह,
घर २ दौड़ २ दीपक जलायेंगे ।
छोड़के विलासिता धरेंगे देशप्रेम व्रत,
क्लेश दु ख में भी सुख चैन हम पायेंगे ॥
करेंगे प्रयोग देश के ही वस्तुओं का नित्य,
भूल के भी माल अब विदेशी न मंगायेंगे ।
होंगे न जो भाव भाषा भेष आदि भारत के,
कैसे हम लोग भारतीय कहलायेंगे ॥ १ ॥
बनेगी स्वदेशही में चिकन चमकदार,
काशमीरे काशमीर में ही मिल जायेंगे ।
देशी तनजेब अब देगी तन जेब खूब,
गाढ़े से प्रगाढ़ प्रेम हम दिखलायेंगे ॥
भेद भाव भूल सब रंग देश रंग ही में,
एक साथ मातृ-भूमि-गुण गान गावेंगे ।
कर के पवित्र प्रण पालन करेंगे नित्य,
तब हम सच्चे भारतीय कहलायेंगे ॥ २ ॥

(६२)

बन्दे मातरम् ।

हर घड़ी है चित्त में तव ध्यान बन्दे मातरम् ।
तू हमारी जान की है जान बन्देमातरम् ॥
चान्द सूरज कर रहे हैं रात दिन तव आरती ।
सुर-सरित सी कर रही जलदान बन्देमातरम् ॥१॥
छत्र तेरा है हिमालय और सिंहासन समुद्र ।
रत्न धन भण्डार है खलिहान बन्देमातरम् ॥
तू कमल की जननि है ब्रह्मा कमल के पुत्र हैं ।
क्यों न सुरगण दें तुम्हें सम्मान बन्दे मातरम् ॥२॥
खाक से तेरे उगे हैं राम लक्ष्मण से सपूत ।
हो रहा जिन के गुणों का गान बन्देमातरम् ॥
है सुरक्षित हर तरफ से और दुनिया से जुदा ।
है प्रकृत स्वाधीनता की आन बन्देमातरम् ॥ ३ ॥
वीर वर सम्राट अक्बर बीरबर राणा प्रताप ।
रत्न हैं तेरे मुकुट के शान बन्देमातरम् ॥
गोद में रखती खिलाती तू बड़े ही प्यार से ।
आर्य्य हो, या मुस्लिमे ईमान बन्देमातरम् ॥ ४ ॥
वार हम सर्वस्व देंगे तव चरण रज पर सहर्ष ।
माल क्यों, क्या जान, क्या ईमान बन्देमातरम् ॥
प्राण सेवा में लगें फिर तव चरण में जन्म लूं ।
और फिर हूँ शौक से कुरबान बन्देमातरम् ॥ ५ ॥
हे जननि हम हो नहीं सकते उऋण ऋण से कभी ।
क्या नहीं तूने किया एहसान बन्देमातरम् ॥

पुत्र तेरे मस्त हैं स्वाधीनता के प्रेम में।
भर दिये तूने बड़े अरमान वन्देमातरम्॥ ६॥
सत्य की तलवार तूने दी कसी सोधी हुई।
कर दिया निर्भीक रखदी शान वन्देमातरम्॥
आज हैं तव पुत्र मिल कर एक ग्यारह हुए।
मार लेंगे आन में मैदान वन्देमातरम्॥ ७॥
हो अगर तेरा इशारा खेत अपने हाथ है।
शत्रुओं को काट लें ज्यों धान वन्देमातरम्॥
देश का भी रक्त चोखा होयगा आखिर "त्रिशूल"।
प्रेम से दे छेड़ तू भी तान वन्देमातरम्॥ ८॥

(६३)

भारत वर्ष।

मस्तक ऊँचा हुआ मही का, धन्य हिमालय का उत्कर्ष।
हरि का क्रीड़ा क्षेत्र हमारा, भूमि भाग्य सा भारतवर्ष॥
हरा भरा यह देश बनाकर, विधि ने रवि का मुकुट किया।
पाकर प्रथम प्रकाश जगत ने, इस का ही अनुसरण किया॥
देवों ने रज सिर पर रक्खी, दैत्यों का हिलगया हिया।
प्रभु ने स्वयं पुण्य-भू कहकर, यहाँ पूर्ण अवतार लिया॥
लेखा श्रेष्ठ इसे शिष्टों ने, दुष्टों ने देखा दुर्द्धर्ष।
हरि का क्रीड़ा क्षेत्र हमारा, भूमि भाग्य सा भारतवर्ष॥
आर्य्य अमृत सन्तान सत्य का रखते हैं हम पक्ष यहाँ।
दोनों लोक बनाने वाले कहलाते हैं दक्ष यहाँ॥
शान्ति पूर्ण शुचि तपोवनों में तत्व हुए प्रत्यक्ष यहाँ।
लक्ष बन्धनों में भी अपना रहा मुक्ति ही लक्ष यहाँ॥

जीवन और मरण का जग ने देखा यहां सकल संघर्ष ।
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा - भूमि-भाग्य सा भारतवर्ष ॥
अङ्कित सी आदर्श मूर्ति है सरयू के तट में अब भी ।
गूंज रही है मोहन मुरली ब्रज-बंशीवट में अब भी ।
लिखा बुद्ध निर्माण मन्त्र जप पाणिकेतु पट में अब भी ॥
महावीर की दया प्रकट है माता के घट में अब भी ॥
मिली स्वर्ण लंका मिट्टी में, यदि हमको आगया अमर्ष ।
हरि का क्रीड़ा क्षेत्र हमारा, भूमि भाग्य सा भारत वर्ष ॥

(६४)

विनय ।

सम्हलो ब्रह्माण्ड बदलता है, प्यारी "आंधी" का झोंका है ।
सोने की लंका गिरती है, गहरा गांधी का झोंका है ॥
राष्ट्रीय सभा की वेदी से, लड़ने के लिये पुकार हुई ।
बिन मूछों के बलवन्तों की, विजयी सेना तैयार हुई ॥
मेरी जंजीरों से जूझ नन्हें हं, साथ तुम्हारा हो—;
हरि ! मेरे इन रणजीतों के मस्तक पर हाथ तुम्हारा हो ॥

(६५)

स्वराज्य ।

जय २ ध्रुव स्वराज्य-प्रहलाद !
बालक मय छात्रों से सोहित सत्याग्रह आहलाद !
"आत्मा राम स्वतंत्र बने" यह गूंज रही है नाद ॥

"त्यागी" प्रेमी बन्धु" करें यदि वे मद प्रकट प्रमाद।
पर नवीन युग के निर्माता, शुभ स्वतंत्रता वाद॥
तीस कोटि का राष्ट्र केसरी, विगत विरोध विवाद।
जनता-जागृति-ज्योति-ज्वाल में, जले कुराज विषाद॥
ब्यूरोक्रेसी रूप होलिका होवे तज 'धकवाद।
जय २ ध्रुव स्वराज्य-प्रहलाद॥

(६६)

हमारी प्रतिज्ञा।

सहेंगे निर्भय हो जेल के दुख, उसे घर अपना बनायेंगे हम।
यहीं थे जन्मे श्री कृष्ण भगवन, समझ यों मस्तक नवायेंगे हम॥
पथिक बने हैं स्वतंत्र पथ के, स्वतंत्रता ही है लक्ष्य अपना।
दमन के कांटों से खौफ खाकर, कदम न पीछे हटायेंगे हम॥१॥
जो लेके आवें जो तौक तो हम, समझ के फूलों का हार पहनें।
उठायें शमशीर कत्ल को वो, सहर्ष गर्दन झुकायेंगे हम॥
पड़ी है बन्धन में मातृ-भू निज, करेंगे संकट से पार उसको।
स्वतंत्र हो वह, स्वतंत्र हो वह, यही निरन्तर मनायेंगे हम॥२॥
करेंगे सब कुछ कहेंगे जेलर, 'नहीं' कभी हम नहीं कहेंगे।
हैं सच्चे प्रेमी स्वदेश के हम, उन्हें यही तो बतायेंगे हम॥
है गोला गोली का दिल से स्वागत, सहेंगे कोड़ों को मार तोपों।
जो प्राण जायेंगे देश-हित तो, प्रसन्न चित्त हो, गवायेंगे हम॥३॥
न होगी चिन्ता हमें हमारी, रंगे रहेंगे-स्वदेश-रंग में।
स्वदेश पर कर निसार सर्वस, स्वदेश में ही समायेंगे हम॥
है अब तो आशा जल्यान कीफिर, 'किशोर' जिसमें शहीद होंगे।
स्वदेश ही पै शिर चढ़ाकर, स्वतंत्र भारत बनायेंगे हम॥४॥

(६७)

राष्ट्रीय सैनिक।

माता के कष्ट मिटाने को सैनिक अगणित तैयार खड़े।
अकड़े हैं सारे रूठे हैं, स्वाधीन मार्ग पर अचल अड़े॥
खादी का खासा कुरता है उसकी ही गांधी टोपी है।
मैया को मुक्त कराने को धन-जान शौक से सौंपी है॥१॥
'वन्देमातरम्' का घन गर्जन वह राष्ट्र-ध्वजा का फहराना।
'गांधीजी' की जय जय-ध्वनि से रिपुओं के दिल को दहलाना॥
'मोहन के प्यारे मन्दिर' में जा, कष्ट झेल मन बहलाना।
इनके कर्मों पर बलि होना, वह वीर-केसरी कहलाना॥२॥
बतलाता है अधिकार देश के जल्दी दौड़े आते हैं।
पापों के डेरे उठते हैं वे स्वेच्छाचारी जाते हैं॥
आते हैं सब सुर स्वर्ग छोड़ भारत को शीश नवाते हैं।
सात्विक भावों का क्रीड़ास्थल इससा न स्वर्ग वे पाते हैं॥३॥

(६८)

है फकत तूही हमारे दर्द का दरमां स्वदेश।
फैज़ पहुँचाता है हमको तेरा दस्तरख्वां स्वदेश।
तू हमारा मेजबाँ है हम तेरे मेहमां स्वदेश।
कालिबे खाकी है हम और तू हमारी जां स्वदेश!
हक़ अदा हो जाय गर हम तुझ पै हों कुर्बां स्वदेश!
जब हो तू प्यासा पिलाऊँ सीन ए सोजा का लहू;
भूक को हाजत पै हाजिर हो दिले गिरियाँ स्वदेश!

गून दिल खिच खिच के चश्मेतर से आने लगता है
जब नजर आते हैं तेरे दीदये गिरियां स्वदेश !
चाक करने लगता हूँ अपना गरेबाने जुनू,
देख कर यह चाक तेरे सब्र का दामा स्वदेश !
क़ाफ़िले को काफ़िले आगे निकलते जाते हैं;
साथ तेज़ी के बढ़ाये चल क़दम हाँ हाँ स्वदेश !
हसरते तेरी निकलते जीते जी मैं देख लूं;
आरजू दिल की यही है और यही अरमाँ स्वदेश !
लाख हो कोई मसीहा हमको 'शायक' इससे क्या,
है फ़कत तूही हमारे दर्द का दरमाँ स्वदेश !

हमारी अभिलाषा ।

श्री हीन हुए भारत में अब पुनि सुधा वृष्टि बर्सावेंगे ।
मान घटावेंगे उनका जो हमको अब कलपावेंगे ॥
नहीं होय वचनों से बिचलित जीवन-ज्योति जगावेंगे ।
मातृ-भूमि के लिये कष्ट सहते सहते मिट जावेंगे ॥
खडे खडे कट जावेंगे पर हिंसा नहीं दिखावेंगे ।
न हो भक्त नौकर शाही के देशभक्त कहलावेंगे ॥
लावेंगे उत्साह हृदय में तब स्वराज्य को पावेंगे ।
ललचावेंगे तो बातों में बहु विधि कष्ट उठावेंगे ॥
चक्र सुदर्शन रूपी चरखे से ही ध्यान लगावेंगे ।
तुच्छ हमें जो समझे हैं उनको निज शक्ति दिखावेंगे ॥
रहे देशकी लाज देश से निज प्रति ये ही चाहेंगे ।
ये देखें हम असहयोग से अपना वांछित पावेंगे ॥
दीखेंगे जब खडे विश्व में करते नाद गगनभेदी ।
[illegible] बनते हो स्वतन्त्र जो माँ के लाल बने कैदी ॥

श्री स्वराज्य-साहित्य-माला
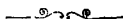
हम लोगोंने ऊपरके नामकी एक साहित्य माला निकालनी प्रारम्भ की है, मालाकी प्रथम पुस्तिका आपके कर कमलोंमें विद्यमान है। जिससे मालाकी नीति स्पष्टतया प्रकट है। तो भी मालाकी नीतिविषयक दो बातें कहनी अत्युक्ति न होगी। मालामें वेही पुष्प-रत्न ग्रथित होंगे जो देश और समाजके लिये लाभप्रद हों, और जिनके पठन पाठनसे सर्व साधारणको लाभ हो। साथ ही मालाका एक प्रधान उद्देश्य यह होगा कि सत्साहित्योंका प्रकाशन सुविधानुसार न्यूनातिन्यून मूल्यमें हो।

इस मालाके स्थायी ग्राहकोंको केवल ।) आना प्रवेश-शुल्क देना होगा, और उनको मालाकी सभी पुस्तकें पौने मूल्यमें दी जायंगी।

पता—

बालेश्वर प्रसाद सिंह, जलेश्वर प्रसाद सिंह,
स्वराज्य साहित्यमाला-कार्य्यालय
दियार गढ़, पो० मझौवां जि०, बलिया।